अध्याय-तृतीय
शोध प्रविधि

D-279

अध्याय- तृतीय

शोध प्रविधि

3.1 भूमिका

अनुसंधान का अर्थ किसी नवीन तथ्यों की खोज करना है। वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान प्रश्न करना, जाँच, गहन निरीक्षण, योजनाबद्ध अध्ययन, व्यापक परीक्षण और तत्परता युक्त उद्देश्य सामान्यीकरण प्रक्रिया सम्मिलित होती है। पी.वी.युंग के शब्दों में- 'अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिनके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है। तथा उनके उन अनुक्रमों, पारस्परिक संबंधों कारणास्तव व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है जो की प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।'

3.2 शोध प्रविधि-

किसी भी शोध कार्य में यह संभव नही हो पाता है कि सभी लक्ष्यगत समष्टि को अध्ययन में शामिल किया जाये अतः समष्टि की समस्त इकाईयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों को एक निश्चित विधि द्वारा चुन लिया जाता हैं। उन संकलित इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते है। इन न्यादर्श के आधार पर ही अध्ययनरत् निष्कर्ष घटित होते हैं।

'प्रतिदर्श या न्यादर्श एक समष्टि का वह अंश होता हैं जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है।'

इग्लिश और इंग्लिश (1980), के अनुसार 'जनसंख्या का एक भाग है जो दिये हुए उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधित्व होता है। इसलिए न्यादर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिए वैद्य होना हैं।'

3.3 प्रयुक्त चर–

स्वतंत्र चर

- ग्रामीण एवं शहरी बालक एवं बालिकाऐं.
- कक्षा–नौवीं के विद्यार्थी

आश्रित चर

- हिन्दी भाषा उपलब्धि
- होने वाली त्रुटियाँ
- स्थान

3.4 न्यादर्श के चयन–

शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श की इकाईयों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया न्यादर्श उस संपूर्ण जनसंख्या या समष्टि का प्रतिनिधित्व करें जिससें वह न्यादर्श चुना गया हैं। चुना गया न्यादर्श जब तक संपूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नही होता है तब तक न्यादर्श के अध्ययन से प्राप्त परिणाम वैद्य और विश्वसनीय नही होते हैं।

न्यादर्श को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि 'व्यक्तियों या वस्तुओं के विस्तृत समुह का एक छोटे आकार का

प्रतिनिधि ही न्यादर्श है। जिसकें आधार पर संपूर्ण जनसंख्या के लिए विश्वसनीय और वैद्य निष्कर्ष निकाले जाते है।'

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श के लिए महाराष्ट्र राज्य के एरंडोल तहसील के चार विद्यालय (शहरी और ग्रामीण) लिये गये हैं। एरंडोल तहसील में कुल शहरी विद्यालय 16 तथा ग्रामीण विद्यालय 25 हैं। उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा चार विद्यालय पसन्द किये गये हैं।

1. इस शोध कार्य के अंतर्गत चार विद्यालय के कुल 82 विद्यार्थियों को चयनित किया गया।
2. न्यादर्श के रूप में कक्षा नौवीं के विद्यार्थियों को चुना गया जिसमें 41 छात्र तथा 41 छात्राओं को लिया गया।

उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श का चयन निम्न तालिका के अनुसार किया गया–

क्र.	विद्यालयों का नाम	विद्यालय का प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या		
			छात्र	छात्राऐं	योग
1.	स.न. झवर माध्यमिक विद्यालय पालधी	शहरी	10	09	19
2.	आर.टी.काबरे विद्यालय एरंडोल	शहरी	11	11	22
3.	गौरी शंकर माध्यमिक विद्यालय खंजे	ग्रामीण	10	11	21
4.	श्रीमती रेना पाटील माध्यमिक विद्यालय रिंगणगांव	ग्रामीण	10	10	20
		कुल	41	41	82

3.5 उपकरण का निर्माण–

किसी भी शोधकार्य हेतु आँकड़े एकत्र करने के लिए उचित उपकरण का चयन अति महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा विद्यालय में लिए जानेवाली हिन्दीभाषा उपलब्धि परीक्षण को देखा गया और प्राप्तांकों को लिया। उपलब्धि परीक्षण का निदानात्मक परीक्षण करके हिन्दीभाषा लेखन कौशल परीक्षण का निर्माण किया गया।

परीक्षण के निर्माण के बाद सर्वप्रथम कक्षा नौवीं में हिन्दी पढ़ानेवाले शिक्षकों से तथा अन्य हिन्दी के तज्ञोसें परीक्षण की जाँच करायी गई उनकी सलाह के अनुसार आवश्यक सुधार किया गया। परीक्षण का विवरण निम्नलिखित हैं।

- **लेखन कौशल परीक्षण–**

लेखन कौशल के परीक्षण के लिए कक्षा नौवीं की हिन्दी पाठ्यपुस्तक में से व्यावहारिक व्याकरण (विरामचिह्न, वचन लिंग, मानकवर्तनी, अव्यय) पत्रलेखन, अनुवाद लेखन, तथा निबंधलेखन को लिया गया।

- **लेखन कौशल परीक्षण का प्रशासन–**

लेखन कौशल परीक्षण शुरू करने से पहले निम्नलिखित निर्देश दिये गये।

- **निर्देश–**

1. सभी विद्यार्थी अपने–अपने स्थान पर बैठे एवं अपने पास पेन रखें।

2. उपर्युक्त स्थान पर अपना नाम, लिंग, विद्यालय का नाम, कक्षा दिनांक लिखें।

3. अपना कार्य स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखें।

4. उत्तर लिखते समय अपने साथी की नकल न करें।

निम्नलिखित जैसी लेखन त्रुटियाँ निकाली गई।

1. **मात्रासंबंधी त्रुटि–**

हिन्दी में कुल मिलाकर 10 प्रकार की मात्राऐं होती है ा, ि, ी, ु, ू े, ै, ो,ौ, लेखन करते समय विद्यार्थियों द्वारा अग्रलिखित प्रकार की त्रुटि करना मात्रात्मक संबंधी त्रुटियाँ कहलाती हैं।

जैसे– मात्राओं का लोप करना, अनावश्यक मात्राएँ लगाना, अशुद्ध मात्राएँ, मात्राओं का स्थान परिवर्तन करना आदि।

2. **विरामचिह्नों की त्रुटि–**

विराम का शाब्दिक अर्थ होता है, ठहराव! विद्यार्थी लेखन करते समय वाक्य या पद के विचार पूर्ण होने से पहले पूर्ण विराम लगा देते है। कभी–कभी विद्यार्थी अल्प विराम तथा अर्द्धविराम के जगह पर पूर्ण विराम लगा देते हैं।

लेखन करते समय विद्यार्थी पूर्ण विराम(।), अल्पविराम(,), अर्द्ध विराम(;), प्रश्नवाचक चिह्न(?), विस्मायादिबोधक चिह्न(!), में त्रुटियाँ करते हैं।

3. **बिन्दुगत त्रुटियाँ–**

बिन्दू की त्रुटियाँ के कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है। हिन्दी में अनुस्वार(ं), चन्द्रबिन्दु(ँ), की त्रुटि बिन्दुगत त्रुटि कहलाती है।

बिन्दुगत त्रुटियाँ निम्नलिखित होती है–

बिन्दूलोप, बिन्दू का स्थान परिवर्तन,अनावश्यक बिन्दू आदि।

4. **शब्दों की त्रुटि–**

शब्दों की त्रुटियाँ निम्न प्रकार से विद्यार्थी करते है। शब्द पुनर्र–लेखन करना, वाक्य को बार–बार लिखते है, तो इसे शब्द या वाक्य पुनर्रलेखन त्रुटियाँ कहते है। तथा शब्द प्रतिस्थापन, शब्द लोप की त्रुटि इस तरह की त्रुटियाँ विद्यार्थी लेखन के समय करते हैं।

5. **अक्षर की त्रुटि–**

प्रायः विद्यार्थी अक्षर संबंधी त्रुटि भी करते है। अक्षर संबंधी त्रुटि निम्नप्रकार की पाई जाती है।

अनावश्यक अक्षर, अक्षर का लोप, अक्षर का स्थान परिवर्तन संयुक्ताक्षर की त्रुटि आदि।

6. **योजक चिह्न की त्रुटि–**

योजक चिह्न सामान्यतः दो शब्दों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है। विद्यार्थी लेखन करते समय योजक चिह्न का प्रयोग अनावश्यक स्थान तथा कभी–कभी चिह्न लगाना भूल जाते है।

जैसे– खानापिना – खाना– पिना

7. **हलन्त की त्रुटि–**

जिस अक्षर के नीचे तिरछी रेखा लगाई जाती है उसे हलन्त कहते है। विद्यार्थी लेखन करते समय इस चिह्न का प्रयोग करने में अधिकांश अशुद्धि करते हैं।

8. **लिंग की त्रुटि–**

प्रायः विद्यार्थी शब्दों के लिंग परिवर्तन करते समय पुल्लिंग की जगह स्त्री लिंग एवं स्त्रीलिंग की जगह पुल्लिंग का लेखन करते है।

9. **वचन की त्रुटि–**

निम्नलिखित वचन में त्रुटि विद्यार्थी करते है– एकवचन, बहुवचन।

10. **मातृभाषा शब्द का प्रयोग–**

विद्यार्थी कभी–कभी अपनी बोलीभाषा एवं अपनी मातृभाषा शब्द का उपयोग लेखन के समय करते है।

3.6 प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रदत्तों का आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान (M) मानक विचलन (S.D) एवं प्रसरण विश्लेषण, 'टी' मान का प्रयोग किया गया।